Spreading...
FRAGRANCE
...all around
Issue : 1
Month : July-August 2013
MONTHLY MAGAZINE OF AISHWARYA P.G. COLLEGE

सफलता की एबीसीडी

A	=	Affirm	:	दृढता से कहें : मै सफल होने में सक्षम हूँ।
B	=	Believe	:	विश्वास करें कि आप सबसे ऊँचा लक्ष्य पा सकते हैं।
C	=	Commit	:	अपने सपने को पूरा करने का संकल्प लें।
D	=	Dare	:	कोशिश, संकल्प लेने और जोखिम लेने का साहस करें।
E	=	Educate	:	खुद को शिक्षित करें। ज्ञान शक्ति है, प्रयोग करें पर शॉर्टकट से बचें।
F	=	Find	:	प्रतिभा, संभावनाएं, धन, समय और तरीका खोजें।
G	=	Give	:	दाता बनें। कुछ मिले, इसके पहले कुछ देना होगा।
H	=	Hope	:	पूरी आशा के साथ प्रार्थना करें और डटे रहें।
I	=	Imagine	:	जीत की कल्पना करें कि आप विजय–रेखा पार कर रहे हैं।
J	=	Junk	:	दिमाग में भरे नकारात्मक व हीनता के विचार फेंक दें।
K	=	Knock	:	उदासी और निराशा को बाहर धकेलें।
L	=	Laugh	:	खुद पर हंसना सीखें लेकिन दूसरों पर नहीं।
M	=	Make it happen	:	जुट जाएं। पूरी ऊर्जा के साथ काम करें।
N	=	Negotiable	:	समझौते में शर्म न करें। कुछ फेर बदल कर लें।
O	=	Overlook	:	समस्याओं में उलझने के बजाय उन्हें जीतें।
P	=	Persevere	:	डटे रहें, हार न मानें। मुश्किलें हमेशा हारती हैं, संघर्ष करने वाले हमेशा जीतते हैं।
Q	=	Quit	:	शिकायतें करना छोड़ दें।
R	=	Reorganize	:	चाहे आप असफल हों या सफल, आपको जीवन के किसी न किसी हिस्से को हमेशा व्यवस्थित करना चाहिए।
S	=	Share	:	सफलता के बिंदु पर प्रशंसा और श्रेय बांटना न भूलें।
T	=	Trade-off	:	अदला–बदली करने से न हिचकें।
U	=	Unlock	:	आस्था, आशा और प्रेम जैसे मूल्यों का ताला खोलें।
V	=	Visualize	:	अपने सपने की तस्वीर सामने रखें। आप खुद को जैसा रखते हैं, वैसे ही बनते हैं।
W	=	Work	:	मेहनत करने का कोई विकल्प नहीं है।
X	=	X-ray	:	जरा रुकें। लक्ष्य का एक्स–रे करें, फिर आगे बढ़ें।
Y	=	Yield	:	अपना जीवन और समस्याएं ईश्वर को सौंप दीजिए। खुद प्रयास करने के बाद ईश्वर को अपना काम करने दीजिए।
Z	=	Zip it up	:	अगर आप आत्मविश्वास के सहारे जीते हैं, अपने उद्देश्यों का एक्स–रे करते हैं और खुद को ईश्वर को सौंप देते हैं तो निश्चित रहिए आपका उत्साह आपको सफल बनाएगा।

22 July 2013

The Program started with lighting of the lamp by the chief guest Prof. N.K. Dashora. In his address he explained the reasons for celebrating Guru Poornima. He recited a story which explained the importance of Guru's Mahima. Dr. Vijay Laxmi Parmar, asked the students to be positive regarding their education and their professors. Reghuveer Ameta BCA IInd Yr. Student told what is the importance of Guru in present world through a story. Swati Dodeja, BCA IIIrd Yr. student told the meaning of Guru Poornima that is "GU" means darkness or ignorance and "RU" means the remover of that darkness. Abhilasha and Arva, BBM Ist Yr. students told that our first Gurus are our parents because parents teach us how to lead a successful life. HOD of Management & Commerce Dr. Shilpa thanked Mr. Dashora and the Principal for enlightening the students. Surendra, BBM Ist Yr. student said a few lines for all the teachers and explained the importance of a Guru. Mrs. Neetu Agarwal (Computer Faculty) told about Guru Dakshina to the students and she blessed students for their success. Ms Payal thanked the Chief Guest, Principal and Staff members for their co-operation.

Tilak Jayanti

23 July 2013

Tilak Jayanti was organized as an in-house function. The function commenced with a speech by Dr. Vijaylaxmi Parmar. She addressed the audience by bringing to their knowledge that Tilak Jayanti is celebrated on Balgangadhar Tilak's birthday. She also mentioned that he came to be known as "Lokmanya" by the country for his efforts to drive away the British from our country. After that Mr. Saurabh took over the dais and continued the program by giving a presentation on "Operating System". He explained the entire process of installing an operating system in one's computer or laptop. The students took keen interest as it was an interactive session which provided the students as well as the faculty members an insight into the IT world. The program concluded with new learning and enhanced knowledge.

Card Making Competition

30 July 2013

A card making competition was organized for the students of Aishwarya P.G. College in the campus. The program began with 10 participants. The participants were allowed to choose the theme of their interest for making a card. Various themes chosen by students were friendship, monsoon, rakhi, independence day etc. Judgment criteria consisted of neatness, creativity and message conveyed by the card. The judges for the competition were Ms. Sharan Kala from BSTC and Mrs. Tunisha Sharma from B.Ed. The winners of the competition were Mohita Verma, BCA Ist Yr. securing the first position followed by Ravi S. Shaktawat, BCA II Yr. and Rahul Jain, BCA Ist Yr. sharing the second position and Prashant Soni, BCA Ist Yr. with third position. The participants were happy for being able to show their creativity through this competition and enjoyed this event to its maximum. Ms. Saba Khan and Ms. Gurneet Suri were in-charge of organizing the event.

MY FIRST DAY IN COLLEGE

थोड़े पैसे, कुछ किताबें, चंद कपड़े और एक बिस्तर पर चादर ओढ़ा कर उसकी गठरी बनाकर मेरे पिता ने मुझे गाँव से शहर आने वाली बस में बैठा दिया। मैने कॉलेज की पढ़ाई हेतु उदयपुर शहर को चुना जो कि मेरे गाँव से मात्र 50 किलोमीटर की दूरी पर था। और हाँ साथ में मेरे पिता ने मुझे ढेर सारा आशीर्वाद भी दिया था जो सबसे कीमती था। सफर में मेरा मन कई तरह की आशंकाओं से घिरा हुआ था। कॉलेज में नवआगन्तुक छात्रों के साथ होने वाली रैगिंग जैसी अप्रिय घटनाओं के बारे में सोच–सोच कर मैं काफी व्याकुल हो गया था। अखबारों में, टी.वी. में दोस्तो आदि से ऐसी अप्रिय घटनाओं को सुनकर तथा उन्हें याद कर के मैं बहुत पेरशान हो रहा था। और उस पर नया शहर, नयी दुनिया, अंजान राहें अंजान लोग, ऐसी बातों ने मेरे डर, मेरी घबराहट को और बढा दिया।

सोचते–सोचते कब उदयपुर आ गया पता ही नहीं चला। मन में मिश्रित से भाव लिये मैं कॉलेज पहुँचा। जहाँ एक ओर कॉलेज में पढ़ने की खुशी थी तो दूसरी तरफ किसी अप्रिय घटना कर डर। जैसे से ही मैं प्रवेश द्वार पर पहुँचा तो मैने देखा कि कुछ छात्र–छात्राएँ नये छात्र–छात्राओं का तिलक लगाकर अभिवादन कर रहे हैं, ये देख मुझे भी थोड़ी राहत मिली। मैने भी तिलक लगवाया और उनसे शुभकामनाएँ लेकर अंदर दाखिल हो गया। मगर मैं अब भी डरा हुआ घबराया हुआ और थोड़ा चिंतित था। मैंने देखा कि कई छात्र–छात्राएँ आपस में समूह बनाकर बातें कर रहे हैं, हँस रहे हैं, कुछ किताबें टटोल रहें है, तो कुछ एक–दूसरे के मित्र बनने की कोशिश कर रहे हैं। मगर मैं अकेला ही खड़ा रहा, मुझे ये वातावरण बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था। तभी एक सज्जन मेरे पास आये। मुझसे मेरा नाम–पता पूछा। मैंने भी उन्हें जवाब दिया। फिर उन्होंने मुझसे बड़े प्यार से पूछा की तुम यहाँ अकेले क्यों खड़े हो? चिंतित भी दिख रहे हो, क्या बात है? अंजान शहर में अंजान जगह पर अपनेपन का थोड़ा सा अहसास पाकर मैने उन्हें अपने दिल की सारी बात सुना दी। फिर उन्होंने मुझे प्यार से समझाते हुये कहा कि जो इंसान सोचता है वो ही होता है। तुम्हें अपने अंदर से नकारात्मकता के ये भाव बिल्कुल निकाल देने चाहिये। इस डर को जितनी जगह दोगे ये उतना ही फैलता जायेगा, डर से कभी डरो मत बल्कि उल्टा तुम डर को डराओ ताकि वह कभी तुम्हारे पास न आये। जीवन में हमेशा सकारात्मक सोच रखो, अपने विचारों में ताजगी और विश्वास लाओ, फिर देखो तुम्हारा जीवन कितना सफल बनता है। उनकी इन बातों ने मुझमें इतना विश्वास, इतनी ऊर्जा भर दी कि अनायास ही मेरे चेहरे पर मुस्कान की एक कली खिल गयी। अचानक मुझे वो संपूर्ण वातावरण पंसद आने लगा और मैं भी निकल पड़ा नये मित्र बनाने के लिये।

बाद में पता चला कि वो सज्जन उसी कॉलेज के प्रोफेसर थे। आज उनकी सीख और बड़ों के आशीर्वाद से मैं भी एक कॉलेज प्रोफेसर हूँ और जब भी कॉलेज में नये विद्यार्थी आते हैं तो मैं भी उनमें आशा और विश्वास की, सकारात्मकता की, कुछ करने की, उम्मीद की एक नयी लौ जलाने की कोशिश करता हूँ।

इस प्रकार मेरे कॉलेज का पहला दिन मुझे एक ऐसा उपहार, एक ऐसी अविस्मरणीय स्मृति अथवा सीख दे गया जिसका अनुकरण सदैव विद्यार्थियों की उन्नति हेतु होता रहेगा।

One of the most common causes of failure is the habit of quitting when one is overtaken by temporary defeat.

जब मैं पहले दिन कॉलेज में आया तो कुछ कम बच्चे दिखाई दे रहे थे। तथा अलग–अलग कक्षाएँ चल रही थीं। तो मैंने एक छात्र से पूछा। उसके बाद मैं बी.सी.ए. प्रथम की कक्षा में गया। तथा कक्षा में बैठा। अनिता मैडम पढ़ा रहीं थी। वह PG Software के बारे में पढ़ा रही थीं। मैंने नोट्स बनाएं तथा एक के बाद एक कक्षाएं चलीं। 12 बजे तक कक्षाएं चलीं। उसके बाद छुट्टी हो गई। अलग–अलग कक्षाओं में अलग–अलग टीचर पढ़ाने आए। कुल चार कक्षाएँ चलीं। एक–एक घण्टे की कक्षा चलती थी। और कम्प्यूटर लैब में गये। तथा कम्प्यूटर चलाए और प्रोग्राम बनाये। C के प्रोग्राम बनाये। कम्प्यूटर लैब के बाद लाईब्रेरी में गया। वहां पर अलग–अलग किताबें और न्यूज पेपर पड़े हुए थे। वहां पर सर से आज्ञा लेकर बैठा। और News paper पढ़ा तथा मेरे विषय की किताबों के बारे में जानकारी प्राप्त की। तथा कुछ किताबें जारी भी कराई। पढ़ने के लिए घर पर भी लाया और जो पढ़ा था वो याद भी किया। कॉलेज में पूरा दिन आनन्द और शान्ति से बीता। सभी टीचर अच्छे थे। उन्होंने अच्छा पढ़ाया, और मैंने सभी अध्यापकों के विषय के बारे में जानकारी प्राप्त की। कुछ देर होने पर भी मैं वेटिंग रूम में बैठ जाता हूँ तथा कुछ अच्छे दोस्त भी मिले। उनके साथ बात भी की। तथा उनके साथ में कॉलेज की पूरी जानकारी प्राप्त की। कैन्टीन में भी गया। वहां पर चाय के साथ दोस्तों से बातें भी की। मैंने कॉलेज का समय पूरी शान्ति व आन्नद के साथ बिताया। अच्छा दिन था, जब कॉलेज में पहले दिन गया जो आज भी याद आता है। यहाँ पर अध्यापक भी अच्छे हैं तथा वह अच्छी तरह समझाते और पढ़ाते हैं तथा ज्ञान की बातें भी समझाते हैं। यहां पर सेमिनार, प्रोग्राम आदि भी होते हैं। यहाँ पर सभी तरह की सुख सुविधा भी मिलती है। अच्छा वातावरण भी है तथा अच्छा कॉलेज है।

– प्रवीण पालीवाल

Don't be fooled by the calendar.... There are only as many days in the year as you make use of.

It was a strange feeling, because stepping out of the college as a student and then entering it again as a faculty was something very new to me. Now I am a graduate and now I will be responsible for teaching & graduating the students of a college. So, it was more of a responsible job than fun. I woke-up early that day, dressed up and reached college half an hour early. It was the sheer excitement that brought me early to the college. I was so excited to know all the staff members and meet the students too. I waited, then two faculty members entered the small room that contained a sofa and a table. We three were sitting there and chatting, we introduced each other. It was all a new experience for me. As it was the first day, I was introduced to new faculties- Sonam Garg and Archna Singh and I found them nice. The first day we did not have to teach. We just had to interact with the staff members and follow and learn the process. We had tea, then the respective subjects were allotted to us we discussed about the subjects. We were introduced to the old staff members. The environment seemed good. "But what we see is not what it is always"

I knew it would be challenging for me and I was all ready for it. In all, my 1st day in college was a new experience and a little exerting for me. Yet I was ready for all the challenges to come by.

Saba Khan, *Asst. professor, BCA*

YOUR YEARS IN COLLEGE... a once in a life time opportunity

A student, who has grown up in a disciplined restricted environment of his/her school feels liberated when he/she enters college. Most of the students think that now that they have entered into a college, free of all shackles they can have a great time and enjoy life. One cannot but agree that to a certain extent this is true. A young boy or a girl must get an opportunity to explore life. But, let us also remember that our college years are also an opportunity which we are never going to get again in life. College years, my friends, shall be made the best use of. Firstly, this liberated feeling shall not distract us from our prime reason behind coming to college i.e. studies. Whatever subject we have chosen, we must strive to gain as much knowledge of it as possible. However, it is also the best time to develop life-long friendships. We must mingle with our peers and try to forge deep friendships with the like-minded ones, to be successful in life now-a-days networking is essential. This is the time when we can nurture a good network of college mentors and friends who will be useful for us in our careers and in life in general. Participating in various academic and cultural activities enables us to open up our inner selves and to discover our inner passions. If you want to make your college years fruitful, you shall try to follow the above tips then only you shall be able to experience the never ceasing fragrance of your college years in your life.

– Ramesh Modi

Editorial Board :

Ramesh Modi
Co-Chairman

Dr. Seema Singh
Advisor & Chairperson

Members

Dr. Archana Golwalkar
Director, AIM & IT

Dr. Vijay Laxmi Parmar
Principal, PG College

Dr. Qayoom Ali Bohra
Principal, ATTC

Mr. Om Prakash Joshi
Principal, APTTS

Deependra Suwalka
Student, B.Com, 2nd Year

Kamlesh Kumawat
Student, B.Com, 2nd Year

Shankar Lal Patel
Student, B.Com, 2nd Year

Kushal Singh
Student, BCA, 3rd Year

Food for thought

- Every Day may not be good... But there is something Good in every day
- There comes a time when you have to choose between turning the page and closing the book.
- The only difference between a good day and a bad day is your attitude.
- Love those people who can make you laugh during those moments when you feel like you can't even smile.
- Whoever is trying to bring you down is already below you.
- In business and in life ... if you want to go FAST... go alone ... but if you want to go far...go TOGETHER..!

Address : Adarsh Nagar, University Road, Udaipur (Raj.)
Tel.: 0294-2471965, 2471966, E-mail : info@aishwaryacollege.org,